Vol.-23 No.-4-2020 RNI No. -46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-23-संख्या-4-2020

Refereed, Peer Reviewed Quarterly Journal Approved by UGC CARE

कला एवं धर्म शोध संस्थान,
लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी

कला सरोवर

KALA SAROVAR

(भारतीय कला एवं संस्कृति
की विशिष्ट शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक
डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी

Vol.-23 No.-4-2020 RNI No. -46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-23-संख्या-4-2020

Scanned with Oken Scanner

विषयानुक्रमणिका

क्रम		पृ. सं.
सम्पादक की कलम से		
अजन्ता की चित्रकला	... ...	iii
डॉ0 मनीष कुमार द्विवेदी	... ...	5-16
Origin and Importance of Acharanga		
Dr. Devendra Kumar	... ...	17-20
अभिनव गुप्त कश्मीर के मर्मज्ञ चिंतक एवं दार्शनिक *(माया से शिव तक)*		
डॉ0 सपना गुप्ता	... ...	21-26
प्राचीन भारतीय साहित्य में भक्ति का स्वरूप		
डॉ0 इन्द्रदेव प्रसाद यादव	... ...	27-30
गुरूनानक-समाज सेवा के दृढ़व्रती		
डॉ0 शुचिस्मिता मिश्रा	... ...	31-34
पंजाबी लोक संगीत की मनमोहक गायन विधा : माहिया		
डॉ0 कुमार सरगम, नवप्रीत कौर	... ...	35-41
माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में)		
प्रतिभा सिंह, डॉ0 पी0एन0 मिश्र	... ...	42-46
An Analytical Study of Swami Dayananda Saraswati's Views on Curriculum of Education		
Rajni Kant Dixit, Prof. Chandana Dey	... ...	47-51
'नगर शोभा' कृति में महिला उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता		
डॉ0 निशा शर्मा	... ...	52-55
मोहन राकेश के साहित्य में आधुनिकता		
सुबोधकांत तिवारी	... ...	56-58
अमरकान्त और बाल साहित्य		
पवन कुमार सिंह	... ...	59-60
डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के कथा-साहित्य में ग्रामीण सामाजिक चिन्तन		
संतोश कुमार	... ...	61-63
समकालीन स्त्री विमर्श और प्रमुख महिला उपन्यास		
घनश्याम	... ...	64-67
वाराणसी की लोक मूर्तिकला		
डॉ0 प्रेमचन्द्र विश्वकर्मा	... ...	68-73
Maintenance of Parents under Hindu Personal Law		
Akshita Dikshit	... ...	74-79
ज्योतिबा राव फूले की शिक्षा-पद्धति		
डॉ0 मानसी पाण्डेय	... ...	80-83
छिंदवाड़ा जिले में कृषि क्षेत्र की शुष्क उपज में भंडारण हेतु निजी क्षेत्र की भागीदारी		
मदन ठाकरे	... ...	84-88
Tourism and Its Socioeconomic Impact in Chamoli district of Uttrakhand, India		
Vivek Upadhyay	... ...	89-98
पुस्तक-समीक्षा	... ...	99-100

माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

(मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

★ प्रतिभा सिंह ★★डॉ० पी०एन० मिश्र

सारांश

शिक्षा एक सतत विकासात्मक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्पूर्ण शैक्षिक आयोजन सम्पादित किया जाता है। किन्तु यह प्रक्रिया तभी सही दिशा एवं गति से संचालित हो सकती है, जब इसके प्रमुख घटक विद्यार्थियों में शिक्षण के प्रति समर्पणएवं शिक्षकों में शिक्षण दायित्व के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो। इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मापन कर इसमें अपेक्षित सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करने के लिए अध्ययन किया गया। इसमें ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के 40–40 कुल 80 शिक्षकों का चयन कर उनकी शैक्षिक अभिवृत्तियोंका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। उक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण शिक्षक व शिक्षकाओंकी शैक्षिक अभिवृत्ति शहरी शिक्षकों से उच्च पायी गयी।

प्रस्तावना :

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शैक्षिक पाठ्यक्रम समाहित होते हैं। शिक्षार्थी इस शैक्षिक प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु होता है, जबकि शिक्षक उसका मार्गदर्शक एवं पथ–प्रदर्शक होता है। शिक्षकइस त्रिध्रुवीय शैक्षिक प्रणाली की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति होता है। वह बालक की योग्यताओं के विकास एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप सुयोग्य समर्पित, सृजनशील एवं प्रभावी नागरिकों का निर्माण करता है। शिक्षक बालक की अन्तर्निहित दक्षताओं के विकास हेतु अनुकूल वातावरण का सृजन करता है, तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत दी गयी विषयवस्तु के अनुरूप प्रभावी ज्ञान का सम्प्रेषणकरता है। शिक्षक इन विशिष्ट गुणों का सम्प्रेषणकरने में तभी सक्षम होता है जब उसमें शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं विभिन्न अभियोग्यताओं का सामंजस्यहो। इसलिए शिक्षक को अध्ययनशील, शिक्षणमें दक्ष, कार्यानुभव युक्त तथा शिक्षण में अभिरूचि रखने वाला होना चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण, पाठ्यक्रमीय संरचना एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन आदि विद्यालयीन कार्य व्यवहार, विद्यार्थियों में सकारात्मक शैक्षिक अभिवृत्ति का विकास करते हैं।

अभिवृत्ति का तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है, जिससे वह किसी व्यक्ति, वस्तु एवं संस्था आदि के प्रति किसी विशेष व्यवहार को इंगित करता है। दूसरे शब्दों में अभिवृत्तियाँ उन व्यक्तित्व प्रवृत्तियों की ओर संकेत करती हैं जिसके द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति, विषय या स्थिति के प्रति व्यक्ति के व्यवहार का निर्णय लिया जाता है। अभिवृत्ति एक अर्जित योग्यता है और यह कक्षा शिक्षण को प्रभावित करती है। अभिवृत्ति का सम्बन्ध वर्तमान एवं भविष्य दोनों से होता है। अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, घटना, विचार या वस्तु के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाती है जिसमें कुछ समय पश्चात परिवर्तन भी हो सकता है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है। वे बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा उसके पूर्व विश्वास क्या है। अभिवृत्तियों का निर्माण व्यक्ति के द्वारा विगत में विभिन्न परिस्थितियों में अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के

★ लाइफ लांग लर्निंग (शिक्षाशास्त्र) विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवां (म०प्र०)
★★ प्रोफेसर-शासकीय शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालय, रीवां (म०प्र०)

Scanned with Oken Scanner

फलस्वरूप होता है। अभिवृत्ति के निर्माण में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्यक्षात्मक, संवेगात्मक, धारणात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष निहित रहते हैं। किसी व्यक्ति की वस्तु, क्रिया एवं विचार के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों हो सकती है।

थर्स्टन के अनुसारः *'अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से सम्बन्धित धनात्मकता ऋणात्मक प्रभाव की मात्रा है।'* **फ्रीमैन के अनुसारः** *'अभिवृत्ति किन्हीं निश्चित परिस्थितियों, व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत रूप से प्रत्युत्तर देने वाली वह स्वाभाविक तत्परता है, जिसे सीखा जाता है तथा वह किसी व्यक्ति विशेष के प्रत्युत्तर देने वाली लाक्षणिक रीति बन जाती है।''*

अध्ययन का औचित्य :

शिक्षा का माध्यमिक स्तर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण एवं विशिष्ट होता है, क्योंकि इस स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं संवेगात्मक दक्षताओ में विशेष परिवर्तन होता है वहीं शिक्षकों में विद्यार्थियों को अपने विषय के ज्ञान के साथ–साथ सामाजिक एवं नैतिक दायित्वों का निर्वहन कराना होता है। शिक्षकों को अपने विषय स्पष्टीकरण के साथ–साथ छात्रों को विषय से जोड़े रखने तथा उन्हेंअभिप्रेरित करने का विशिष्ट दायित्व निर्वाह भीकरना पडता है। शिक्षक अपने इस दायित्व में तभी पूर्णतः सफल हो सकता है जब उसमें अपने शिक्षण के प्रति विशेष अभिरूचि तथा सकारात्मक अभिवृत्ति हो, इसलिए शोधार्थीने *''माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों कीशैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''* अपने शोध प्रपत्र में किया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

यादव, जे0एन0(2010)–ने *''उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया''।* प्रस्तुत अध्ययन में इन्होंने पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण छात्रों से अधिकपायी गयी। **हीरेमठ, ए सतीश(2012)** : ने *''माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं उनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति''* पर शोधकार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में इन्होंने पाया कि माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर भिन्न–भिन्न है। विज्ञान वर्ग के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता कला वर्ग के अध्यापकों से उच्च पायी गयी। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।**चोटिया, शीतल (2015)** : ने *''उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नव नियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण अभियोग्यता, नेतृत्व व्यवहार एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया।''*प्रस्तुत अध्ययन में इन्होंने पाया कि–उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नव नियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण अभियोग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अनुभवों शिक्षकों का नेतृत्व व्यवहार नवनियुक्त शिक्षकों से उच्च पाया गया। उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नव नियुक्त एवं अनुभवी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों में साँख्यकीयदृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''(मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

Scanned with Oken Scanner

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि व प्रक्रिया :

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण**प्रविधि** पर आधारित है।

न्यादर्श व जनसंख्या

न्यादर्श में ग्रामीण एवं शहरी परिक्षेत्रों के कुल 80 शिक्षकों (ग्रामीण परिक्षेत्रोंके20 शिक्षकएवं 20 शिक्षिकाओं तथा 20 शहरी परिक्षेत्रों के शिक्षक एवं 20 शिक्षिकाओं शहरी) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में *डॉ0 जय प्रकाश* एवं *आर0पी0 श्रीवास्तव* द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत *टीचिंग एप्टीट्यूट टेस्ट* का प्रयोग किया गया है, जिसमें शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्तियों का मापन किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का सारणीयन :

सारणी–01

परिकल्पना–01 :*माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।*

वर	N	M	S.D.	D	σ D	t-value	सार्थकता
ग्रामीण शिक्षक	20	114.3	7.23	5.8	2.25	2.57	0.05 स्तर पर *असार्थक*
शहरी शिक्षक	20	108.5	7.05				

विश्लेषण एवं व्याख्या:

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों के शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 114.3 है तथा मानक विचलन 7.23 है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षकों के शिक्षण अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 108.5 तथा मानक विचलन 7.05 है। परिगणित टी–अनुपात 2.57 है जो स्वतन्त्रयांश (df)38 के लिये सार्थकता स्तर .05 पर टी–सारणीमान 2.62 से कम है किन्तु 0.01 स्तर पर टी–सारणीमान 1.97 से अधिक है जो सार्थक

Scanned with Oken Scanner

है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर लिया गया। चूंकि ग्रामीण शिक्षिकाओं के शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्ताकों का मध्यमान शहरी शिक्षिकाओं के शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्ताकों के मध्यमान से उच्च है। अतः ग्रामीण शिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति शहरी शिक्षिकाओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण शिक्षिकाओं का कार्य संतोष, उनकी अभिरूचि विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण आदि हो सकता है।

सारणी–02

परिकल्पना–02 :*माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।*

चर	N	M	S.D.	D	σ D	t-value	सार्थकता
ग्रामीण शिक्षिका	20	115.5	7.62	4.7	2.36	1.99	0.05 स्तर पर *असार्थक*
शहरी शिक्षिका	20	110.8	7.34				

विश्लेषण एवं व्याख्या:

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण शिक्षिकाओं के शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 115.5 है तथा मानक विचलन 7.62, है जबकि माध्यमिक विद्यालयों के शहरी शिक्षिकाओ की शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान 110.8 तथा मानक विचलन 7. 34 है। परिगणित टी–अनुपात1.99 है, जो स्वतन्त्रयांश (df)38 के लिये सार्थकता स्तर .05 पर टी–सारणीमान 2.62 से कम हैं, किन्तु 0.01 स्तर पर टी–सारणीमान 1.97 से अधिक हैं, जो कीसार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरीशिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर लिया गया। चूंकि ग्रामीण शिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्ताकों का मध्यमान शहरी शिक्षिकाओं के शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी प्राप्ताकों के मध्यमान से उच्च है। अतः ग्रामीण शिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति शहरी शिक्षिकाओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण शिक्षिकाओं का कार्य संतोष, उनकी अभिरूचि विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण आदि हो सकता है।

निष्कर्ष :

1. ***ग्रामीण शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति शहरी शिक्षकों से उच्चपायी गयी।***
2. ***ग्रामीण शिक्षिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति शहरी शिक्षिकाओं से उच्च पायी गयी।***

सुझाव–

माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता में निस्देह रूप से शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से प्रभावित होती है, जिसके विकास हेतु निरंतर कार्यशालाएँ, विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं पारिपोसिक आदि की व्यवस्था की जाय, विद्यालयों के शैक्षिक वतावरण, पाठ्यक्रमी संरचना एवं पाठ्यक्रम सगामी क्रिया का आयोजन किया जाए, साथ ही साथ छात्रों में भी सकारात्मक शैक्षिक अभिवृत्ति विकसित करने हेतु निरंतर यथोचित प्रयास किया जाय।

Scanned with Oken Scanner

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1. अग्रवाल, आई0पी0, (1988) : रिसर्चेज इन इमर्जिंग फील्ड्स ऑफ एजूकेशनः कान्सेप्ट्स, ट्रेन्डस एण्ड प्रासपैक्ट्स, नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
2. अस्थाना, विपिन, (1986): मनोविज्ञान और शिक्षा में सॉख्यिकी, आगरा–2,विनोद पुस्तक मंदिर।
3. आर्य, डोनाल्ड, (1972): इट आल, इन्ट्रोडक्सन टू रिसर्च इन एजूकेशन, न्यूयार्क।
4. उपाध्याय, प्रतिभा, (2007): भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
5. एण्डरसन, आर0एल0 एवं बेनराफट, टी0ए0, (1962) : स्टेटिस्टिकल थियरी ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क, मैकग्रा हिल बुक कम्पनी।
6. ओड, एल0के0, (1978) : शिक्षा के नूतन आयाम, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
7. कपिल, एच0के0, (1994) : सॉख्यिकीके मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तकमंदिर।
8. हुसैन लियाकत, (2011) "माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति का शिक्षण व्यवहार के साथ संबंध।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडेमिक रिसर्च इन बिजनस एंड सोशल साइंस, vol–01, no–02 अक्टूबर

Scanned with Oken Scanner

कला एवं धर्म शोध संस्थान, लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी

उद्देश्य : गतिविधियाँ

- कला एवं धर्म शोध संस्थान, रजिस्ट्रेशन नं0 7493/91-वर्ष 1992 से 2021 तक अनवरत अब तक अपने अनुभवी प्रतिभाशाली शोध अधिकारियों एवं उच्च शोध कर्त्ताओं के माध्यम से भारतीय कला, धर्म एवं संस्कृति के विविध आयामों के चिन्तन, शोध एवं दार्शनिक तत्त्वों की खोज में सतत् प्रयासरत है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान, लोक कल्याणकारी ट्रस्ट के रूप में जनवरी 31.1.2014 से वाराणसी से पंजीकृत रजिस्ट्रेशन नं012 अपने उच्च शोध कार्यों के सफल संचालन में गतिशील है।
- कला एवं धर्म सत्य एवं सौन्दर्य का आभास है। यह आभास रसात्मक होता है, जो परम चेतना ऊँ तत्सत् का प्रतीक रूप है, वस्तुतः यही रहस्य ही कला ज्ञान है। धर्म के आध्यात्मिक स्वरूप ने कलाओं का सृजन किया। भारतीय कला में जीवन-संस्कृति की स्पष्ट छाप है, जिससे भरतीय कला, धर्म एवं दर्शन के विविध ग्रन्थों का सृजन हुआ, जिसका प्रतिबिम्ब भारतीय वाङ्मय में में देखा जा सकता है।
- कला का मूलाधार सौन्दर्य की सृष्टि में परम सत्य की खोज करना, जो मानव को सतत् आनन्द की तरफ उन्मुख करती हुई परमानन्द का आत्मसाक्षात्कार कराती है जो पूर्णतया धर्म पर आधारित है। सदाचार, विनय, आनन्द, सुख एवं शान्ति धर्म के ही प्रतीक हैं। निष्कर्षतः कला एवं धर्म के आनन्दमय एवं सत्यनिष्ठ तत्त्वों का आभास कराना कला एवं धर्म शोध संस्थान का
- प्रमुख लक्ष्य है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा संचालित कला सरोवर (त्रैमासिक) शोध पत्रिका के माध्यम से भारतीय इतिहास
- धर्म, दर्शन, भाषा-साहित्य ज्ञान एवं संस्कति में कला धर्म के एवं महत्व को प्रतिपादित करना प्रमुख उद्देश्य है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी प्रति वर्ष साहित्य, कला, इतिहास, संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए विद्वानों
- को सम्मान एवं पुरस्कार प्रदान करता है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान अपने कार्यरत शोध अधिकारियों, शोध सहायकों एवं शोधार्थियों के सहयोग से भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, कला, संगीत, आयुर्वेद, योग एव तकनीकी ज्ञान सम्बन्धीअनेक विषयों पर
- शोध कार्य करके भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं मानव कल्याणकारी बिकास योजनाओं में सतत् प्रयत्नशील है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी अपने स्वयं के प्रकाशन संस्थान के अतिरिक्त कला प्रकाशन, मनीष प्रकाशन एवं मीरा
- पब्लिकेशन के माध्यम से दुर्लभ एवं उपयोगी शोध ग्रन्थों के लगभग 1000 ग्रन्थों का प्रकाशन कर चुका है।
- कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा समय-समय पर आयोजित शोध सेमिनार, विचारगोष्ठी, कम्प्यूटर शिक्षण, योग
- शिक्षण, रोजगार परक सांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के उत्तरोत्तर उत्थान के लिए प्रयत्नशील है।
- कला के विविध उपादानों (चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीतकला एवं काव्यकला) के अलग-अलग प्रभागों की
- स्थापना करके उनके विकास, संवर्धन एवं उनके क्षेत्र में शोध पूर्ण तथ्यों का अनुसंधान करना परम लक्ष्य है।
- भारत के विविध अंचलों में प्रचलित लोक कलाओं, धर्म एवं संस्कृति की सांस्कृतिक मान्यताओं का अध्ययन, खोज एवं
- उनके नये-नये तथ्यों का पता लगाकर भारतीय जनमानस में उनका प्रचार एवं प्रसार करना प्रमुख गतिविधियाँ है।
- धर्म के तत्व को वैदिक, पौराणिक साहित्यिक एवं वैज्ञानिक सामग्रियों के आधार पर अध्ययन एवं शोध करके सरल एवं नवीन
- मार्ग की खोज करना जो जन-साधारण को सहज हो, साथ ही चिन्तन एवं साधना द्वारा परम सत्य की खोज करना संस्थान का परम उद्देश्य होगा।
- कला एवं धर्म विषयक प्रकाशित एवं अप्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रन्थों को ढूंढ़कर उनका प्रकाशन एवं व्याख्यान आयोजित करना संस्थान का परम लक्ष्य है।

प्रकाशक - कला एवं धर्म शोध संस्थान
रजि0 नं0 7493/91-92 से 31 दिसम्बर 2013 एवं न्यास (ट्रस्ट) रजि0 नं0-12-31.1.2014
ऑफिस- बी0 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी, बी0एच0यू0, वाराणसी-221005
फोन : (0542) 2310682, मो0 : 9451397205, website : kalaevamdharmashodhsansthan.com

Scanned with Oken Scanner